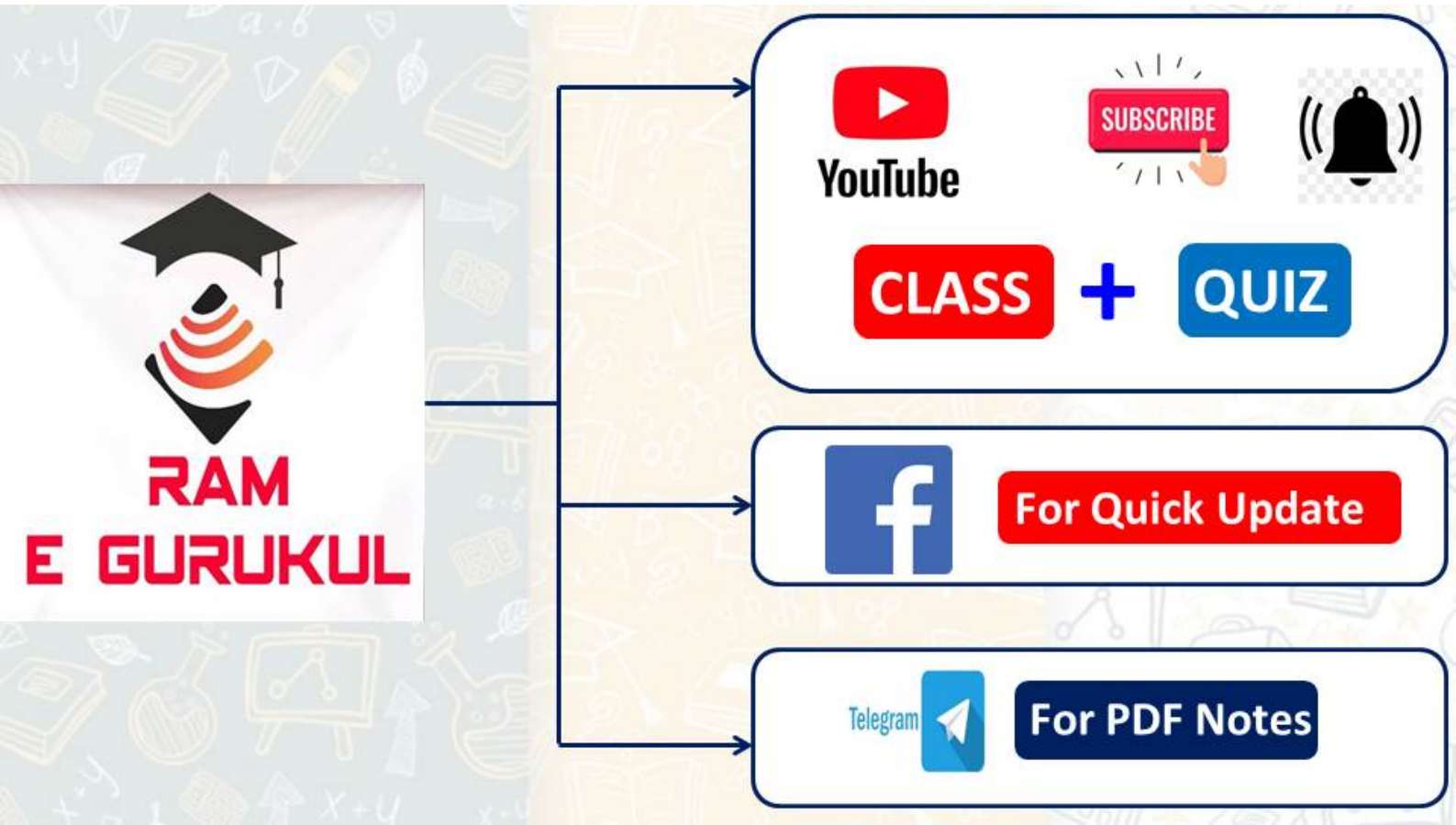
RAM
E GURUKUL
YouTube
SUBSCRIBE
CLASS
+
QUIZ
For Quick Update
Telegram
For PDF Notes

आधुनिक भारत का इतिहास

Chapter-1 यूरोपीय कम्पनियों का आगमन

वास्कोडिगामा

- यह पुर्तगाली नाविक था। यह केप ऑफ गुड होप (उत्तमाशा अंतरीप) होते हुए एक गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मनीक की सहायता से 17 May 1498 ई० में कालीकट बन्दरगाह पर कप्पकडावू नामक स्थान पर पहुँचा।
- कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन ने वास्कोडिगामा का स्वागत किया।

Notepoint :- पेड्रो अल्वरेंज केब्रल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।

- 1502 ई० में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

- पुर्तगाली → डच → ब्रिटिश → डेनिश → फ्रांसीसी → स्वीडिस

* पुर्तगाली :- 1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।

फ्रांसिस्को डी० अल्मोड़ा [1505 – 1509]

- यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर बनकर आया था। इसने 1509 में मिस्त्र, तुर्की व गुजरात की संयुक्त सेना को पराजित कर दीव पर अधिकार कर लिया।

ब्लू वाटर पॉलिसी

- यह पॉलिसी हिन्दमहासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेड़ा ने शुरु की थी।
- पुर्तगाल की राजधानी - लिस्बन

Fariha

19-02-2019 12:52

अल्फांसो डी॰ अल्बुकर्क (1509 – 1515)

- भारत में पुर्तगाली शक्ति की वास्तविक नींव डालने वाला अल्फांसो डी॰ अल्बुकर्क था।
- जो सर्वप्रथम 1503 ई॰ में भारत आया और उसी समय (1503ई॰) उसने कोचीन में पुर्तगालियों के प्रथम - दुर्ग का निर्माण करवाया।
- 1509 ई॰ में अल्बुकर्क भारत में पुर्तगालियों का गवर्नर नियुक्त हुआ।
- 1510 ई॰ पुर्तगालियों ने गोवा के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया, जो उस समय बीजापुर के युसुफ आदिल शाह सुल्तान के अधीन था।
- 1511 ई॰ में अल्बुकर्क ने मलक्का और 1515 ई॰ में फारस की खाड़ी में अवस्थित होर्मुज बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया।
- अल्बुकर्क ने अपने क्षेत्र में सती प्रथा बन्द करवा दी।
- अल्बुकर्क राजाराम मोहन राय का पूर्व गामी था।
- पुर्तगीजों को भारतीय स्त्रियों से विवाह के लिए अल्बुकर्क ने प्रोत्साहित किया।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगीज़ सेना में भारतीयों की भर्ती प्रारम्भ की।

निन्हो डी॰ कुन्हा (1529 – 1538)

Farha

- अल्बुकर्क के बाद दूसरा महत्वपूर्ण पुर्तगाली गवर्नर निन्हो डी॰ कुन्हा था। जिसने 1529 ई॰ में भारत में कार्यभार ग्रहण किया।
- कुन्हा ने 1530 ई॰ में शासन का प्रमुख केन्द्र कोचीन के स्थान पर Goa को बनाया।
- कुन्हा ने दमन, साल्सेट, चौल, बम्बई, सेन्टटॉमस, मद्रास और हुगली में पुनः अपने केन्द्र स्थापित किये।
- 1661 ई॰ में तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट (अंग्रेज) चार्ल्स द्वितीय ने पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह कर लिया और पुर्तगालियों ने 'चार्ल्स द्वितीय' को मुम्बई द्वीप दहेज में दे दिया।

19-02-2019 12:53

19-02-2019 12:58

Important Facts

- बंगाल के शासक 'मसूद शाह' द्वारा पुर्तगालियों को चटगाँव और सतगाँव में व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने की अनुमति दी गई।
- 'अकबर' की अनुमति से हुगली में कम्पनी की स्थापना की गई।
- शाहजहाँ ने पुर्तगालियों के अधिकार से 'हुगली' को छीन लिया था।

* **कार्टज आर्मेडा काफिला व्यवस्था** :- यह समुद्री व्यापार पर नियंत्रण व्यवस्था थी। इसके अन्तर्गत कोई भी भारतीय या अरबी जहाज बिना 'परमिट' लिये अरब सागर में नहीं जा सकता था।
इन जहाजों में काली मिर्च व गोला बारूद ले जाना मना था।

पुर्तगालियों के पतन के कारण

- पुर्तगालियों का भ्रष्ट शासन, दोषपूर्ण व्यापार प्रणाली, धार्मिक और वैवाहिक नीति, योग्य शासकों का अभाव, स्पेन द्वारा पुर्तगाल का विलय, डचों का प्रवेश एवं सैन्य चुनौती आदि पुर्तगालियों के पतन के कारण बनें।

पुर्तगालियों की भारत को देन

Farha

- मध्य अमेरिका से तम्बाकू, मूँगफली, आलू, मक्का, पपीता और अमरूद का भारत में प्रवेश पुर्तगालियों ने कराया।
- बादाम, लीची, संतरा, अनानास एवं काजू का प्रवेश अन्य देशों से भारत में पुर्तगालियों के माध्यम से हुआ।
- जहाज निर्माण तथा प्रिंटिंग प्रेस (1556 ई०) की स्थापना भारत में पुर्तगालियों ने प्रारम्भ की।
- पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला कला का अगमन हुआ।

डच

⊙ समस्टरडम - नीदरलैण्ड की राजधानी

Farha

- डच पुर्तगीजों के बाद भारत आये।
- डच नीदरलैण्ड व हॉलैण्ड के निवासी थे।
- डचों की कम्पनी का नाम यूनाइटेड ईस्ट इण्डिया कम्पनी ऑफ नीदरलैण्ड था।
- डचों ने भारत में अपनी 'प्रथम फैक्ट्री' '1605 ई.' में मसूली पट्टनम में स्थापित की।
- डचों का भारत में प्रथम दल कार्नेलियस डेहस्तमान के नेतृत्व में भारत आया।
- डचों नें '1602 ई.' में गुजरात, कोरोमण्डल तट एवं बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा में व्यापारिक फैक्ट्रियाँ स्थापित की।
- डचों ने मसूली पट्टनम, पुलीकट, सूरत, कराइकल, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में कोठियाँ खोली।
- डचों ने बंगाल में पहली फैक्ट्री '1627' में पीपली (स्थाई कम्पनी) में स्थापित की।
- '1653' में डचों ने हुगली के निकट चिनसुरा में अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की।
- चिनसुरा (बंगाल) में डचों ने गुस्तावुस नामक किले का निर्माण किया।
- इसके बाद डचों ने 'कासिमबाजार' और 'पटना' में फैक्ट्री स्थापित की।
- कोचिन और कन्नानोर डचों के प्रमुख व्यापारिक 'केन्द्र' थे।
- '1690 ई.' के बाद पुलीकट के के बदले नागपट्टनम डचों का 'मुख्य केन्द्र' बन गया।
- डच मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, वस्त्र, अफीम व शोरा का व्यापार करते थे।
- डचों की व्यापारिक व्यवस्था सहकारिता (Cartal) पर आधारित थी।
- '1759' में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य बेदरा का युद्ध हुआ जिसमें डच पराजित हुए और उनका भारत से अन्तिम रूप से पतन हो गया।

19-02-2019 12:59

- वेद्रा के युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व लॉर्ड क्लाइव ने किया

Notepoint:- 'मसूली पट्टनम और सूरत' से डच 'नील' का निर्यात करते थे।

- भड़ौच बन्दरगाह से डच कपड़े का निर्यात करते थे।
- पुलीकट में डच अपने स्वर्ण पैगोडा (सिक्के) ढालते थे।
- सूती कपड़ा, रेशम, अफीम तथा शोरा Bengal से डचों द्वारा निर्यात किये जाते थे।
- भारत से अफीम डचों द्वारा जावा और चीन में निर्यात किया जाता था।
- डच फैक्ट्रियों के प्रमुखों को फैक्टर कहा जाता था।
- डच कम्पनी के निदेशकों को भद्रजन XVII कहा जाता था।

अंग्रेज

Farha

- भारत आने वाला प्रथम अंग्रेज यात्री जान मिल्डेन हॉल था जो स्थल मार्ग से '1597' में आया था।
- भारत में कैप्टन हॉकिन्स '1608 ई.' में समुद्री मार्ग से हेक्टर (Red Dragon) नामक व्यापारिक जहाज से सूरत बन्दरगाह पर आया।
- 1599 ई. में London में व्यापारियों के एक समूह ने The Governor and company of merchants of trading in to the east Indies नामक company की स्थापना पूरब के देशों के साथ व्यापार करने हेतु की।
- 31 Dec 1600 ई. में ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ प्रथम ने एक शाही फरमान देकर इस company को '15 वर्षों' के लिए पूरब के देशों के साथ व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- East India Company ने '1608 ई.' में सूरत में एक व्यापारिक कोठी खोली।
- जेम्स प्रथम के एक पत्र के साथ कैप्टन हॉकिन्स को '1608' में भारत भेजा।

19-02-2019 12:59

★'1609 ई॰' में कैप्टन हॉकिन्स बादशाह जहाँगीर से Agra में मिला था।

⊙ जहाँगीर ने हॉकिन्स को चार सौ का मनसब तथा एक जागीर और 'खाँन की उपाधि' दी।

⊙ कैप्टन हॉकिन्स तुर्की और फारसी भाषा का ज्ञाता था।

⊙ हॉकिन्स ने जहाँगीर से सूरत में एक अंग्रेजी company खोलने की अनुमति प्रदान कर ली, परन्तु मुगल दरबार में पुर्तगाली प्रतिद्वन्द्वी सौदागरों के कारण वह अनुमति शीघ्र ही रद्द कर दी गई।

⊙ '1611 ई॰' में हॉकिन्स 'England' लौट गया। Farha

⊙ '1613 ई॰' में जहाँगीर ने अंग्रेजों को 'सूरत में' स्थाई रूप से एक कोठी खोलने की अनुमति दी।

⊙ हॉकिन्स के वापस जाने के बाद '1615 ई॰' में जेम्स प्रथम ने सर टॉमस रो को मुगल दरबार में भेजा।

⊙ 10 Jan 1616 ई॰ में टॉमस रो जहाँगीर से अजमेर में मिला था।

⊙ सर टॉमस रो 3 वर्ष तक 'राजदूत' के रूप में अजमेर, माण्डू, इलाहबाद में रहा।

⊙ Feb 1619 में सर टॉमस रो England वापस चला गया।

⊙ 1623 ई॰ तक अंग्रेजों ने सूरत, भड़ौच, अहमदाबाद, मछली-पट्टनम, आगरा और अजमेर में कोठियाँ स्थापित कर ली थीं।

⊙ 1640 ई॰ में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की और आत्मरक्षा के लिए वहाँ एक दुर्ग का निर्माण कराया और उसका नाम 'सेंट जार्ज का किला' (फोर्ट सेंट जार्ज) रखा।

⊙ 1651 ई॰ में बंगाल में व्यापार विस्तार करने के उद्देश्य से ब्रिजमैन के नेतृत्व में हुगली में भी एक कोठी खोली

⊙ हुगली के बाद कासिम बाजार, पटना तथा राजमहल में अंग्रेजी फैक्ट्रियाँ स्थापित की।

19-02-2019 13:00

- 1661 ई० में ही चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने के उपलक्ष्य में दहेज के रुप में बम्बई बन्दरगाह मिला था।
- चार्ल्स द्वितीय ने 1668 ई० में बम्बई बन्दरगाह को दस पौण्ड वार्षिक किराये पर 'East India company' को दे दिया।
- बम्बई का वास्तविक संस्थापक 'गेराल्ड आंगियार' को माना जाता है।
- East India Company की स्थापना के समय भारत में सम्राट अकबर (1600ई०) का शासन था।
- अंग्रेजो ने हार्मुज बन्दरगाह को पुर्तगालियों से 1604ई० में जीता था।
- अंग्रेजों को 1632 ई० में गोलकुण्डा के सुल्तान ने सुनहरा फरमान (Golden farman) दिया, जिसके मुताबिक 500 पैगोडा सालाना कर देने पर उन्हें गोलकुण्डा राज्य के बन्दरगाहों में व्यापार करने की अनुमति मिली।
- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात 1715 में company ने मुगलदरबार में जान सारमन की अध्यक्षता में एक शिष्ट मण्डल भेजा।
- शिष्ट मण्डल में विलियम हैमिल्टन शल्य चिकित्सक था, जिसने फरुखसियर को एक भयंकर रोग से स्वस्थ्य किया।

बंगाल में ब्रिटिश फैक्ट्रियों की स्थापना

Farha

- बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 1651 ई० में एक फरमान जारी कर बंगाल में तीन हजार रुपय वार्षिक कर के बदले व्यापार का विशेषाधिकर 'अंग्रेजों' को प्रदान किया।
- 1686 ई० में अंग्रेजों एवं औरंगजेब की भिड़न्त हुई (कारण- हुगली में अंग्रेजों द्वारा लूट) लड़ाई में अंग्रेजों की हार हुई एवं अंग्रेजों को हुगली छोड़ना पड़ा।

19-02-2019 13:00

- औरंगजेब ने अंग्रेजों से 1,50,000 Rs हर्जाना लेकर पुनः व्यापार की छूट प्रदान कर दी।
- 1698 ई० में बंगाल के सूबेदार अजीम-उस-शान ने सूतानती, कोलिकाता व गोविंदपुर की जमींदारी अंग्रेजों को सौंप दी।
- जाब चार नॉक ने सूतानती, कोलिकाता एवं गोविंदपुर को मिलाकर एक नये नगर 'कलकत्ता' की स्थापना की।
- 1700 ई० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किले की स्थापना की गई। इसका Governor - चार्ल्स आयर को बनाया गया।
- फर्रुखशियर के फरमान :- कलकत्ता के आस पास 38 गाँव खरीदने का अधिकार दिया।
- सूरत में 10,000 Rs वार्षिक देने पर company के समस्त आयात-निर्यात को कर मुक्त कर दिया गया।

Farha

डेनिश या डेन कम्पनी

- अंग्रेजों के बाद भारत में डेनिस व्यापारी 1616 ई० में आये।
- डेन लोगों ने अपनी प्रथम फैक्ट्री - 1620 ई० में तंजौर के ट्रांकेबर (Tamil Nadu) में स्थापित की।
- डेन लोगों ने दूसरी फैक्ट्री - 1676 ई० में बंगाल के सीरामपुर में स्थापित की।
- डेनिशों ने भारत में लगभग '25 वर्षों' तक व्यापार किया।
- इनके व्यापार में लगातार गिरावट होने के करण 1745 ई० में, इन्होने अपनी सभी फैक्ट्रियाँ अंग्रेजों के हाथों कम दामों में बेच दी एवं भारत छोड़कर चले गये।

फ्रांसीसी

- भारत में व्यापारिक दृष्टि से सबसे अन्त में फ्रांस के व्यापारी आये।
- सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कोल्बर्ट के लगातार प्रयासों के बाद 1664 ई० में फ्रेंच ईस्ट इण्डिया company की स्थापना हुई।

12-02-2019 13:10

*जिसका नाम कम्पनी द इण्डस कोरियन्टल रखा गया।
◉1667 ई० में फ्रांसिस केरॉन या फ्रेंको केरो की अध्यक्षता में एक दल भारत आया।
◉इस दल ने 1668 में सूरत में पहली फैक्ट्री (फ्रेंसीसी) स्थापित की।
◉फ्रांसीसियों ने 1669 ई० में मसूली पट्टनम में दूसरी फैक्ट्री स्थापित की।
◉1673 ई० में फ्रेंसिस मार्टिन ने सूबेदार शेरखाँ लोदी से पुडुचुरी नामक एक गाँव प्राप्त किया जो बाद में पाण्डचेरी नाम से जाना गया।
◉फ्रेंसिस मार्टिन ने पाण्डचेरी में फोर्ट लुई का निर्माण कराया।
◉इसीलिए फ्रेंसिस मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
◉बंगाल में फ्रेंसीसियों ने मुगल सूबेदार साइस्ता खाँ से भूमि प्राप्त करके 1690-92 में चंद्रनगर, नामक प्रसिद्ध केन्द्र स्थापित किया।
◉1693 ई० में डचों ने अंग्रेजों की सहायता से फ्रेंसीसियों से पाण्डचेरी को छीन लिया।
◉किन्तु 1697 ई० की रिजविक की संधि द्वारा फ्रांसीसियों को पाण्डचेरी दोबारा दे दिया गया।
◉1721 ई० में फ्रांसीसियों ने मॉरिशश पर अधिकार कर लिया।
◉1724 ई० में मालाबार समुद्र तट पर स्थित माहे पर अधिकार कर लिया।
◉1739 ई० में फ्रांसीसियों ने कराइकल पर अधिकार कर लिया

अंग्रेज, फ्रांसीसी संघर्ष

Tasha

◉भारत में अंग्रेज-फ्रेन्च युद्ध ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध से आरम्भ हुआ था।
◉उस समय फ्रांसीसियों का मुख्यालय पाण्डचेरी में था तथा मछली पट्टनम, कराइकल, माहे, सूरत एवं चन्द्रनगर में उप-कार्यालय थे।

① अंग्रेजों की मुख्य बस्तियाँ - मद्रास, बम्बई और कलकत्ता में थीं।
② अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों का भारत में संघर्ष कर्नाटक से प्रारम्भ हुआ था।

कर्नाटक का प्रथम युद्ध [1746-48 ई०]

② कारण :- यह युद्ध 1740 में आरंभ हुए ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध का विस्तार मात्र था। इसके तात्कालिक कारण निम्नलिखित थे।-

* अंग्रेज कैप्टन बार्नेट के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना द्वारा कुछ फ्रांसीसी जलपोतों पर कब्जा कर लिया जाना।
* फ्रांसीसी Governor डूप्ले ने मॉरीशस के फ्रांसीसी गवर्नर लाबूर्दने की सहायता से मद्रास पर अधिकार कर लेना।

② सेन्ट थोमे का युद्ध (अडयार नदी के किनारे) :-

② यह फ्रांसीसी सेना एवं कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच लड़ा गया।
② इस युद्ध में फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व कैप्टन पैराडाइज ने किया जिसमें फ्रांसीसी सेना की जीत हुई।
② युद्ध की समाप्ति :- यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति ए-ला-शापल की सन्धि (1748 ई०) से हुई। इसके प्रभावस्वरूप से भारत में भी युद्ध समाप्त हो गया।

कर्नाटक युद्ध के परिणाम

② दोनों दल बराबर रहे परन्तु स्थल पर फ्रांसीसी श्रेष्ठ रहे।
② मद्रास पुनः अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।
② डूप्ले की ख्याति में वृद्धि हुई।

Jasha

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1749-54 ई०)

⊙ कारण :- • डूपले की राजनैतिक महत्वाकांक्षा।
• कर्नाटक के नवाब के पद के लिए संघर्ष।
• दक्कन के सूबेदार का पद।

⊙ अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों का समर्थन :-

★ कर्नाटक के नवाब के लिए - फ्रांसीसी - चाँद साहब
अंग्रेज - अनवरुद्दीन

★ दक्कन के सूबेदार के लिए - फ्रांसीसी - मुजफ्फर जंग
अंग्रेज - नासिर जंग

- घटना क्रम -

⊙ अम्बूर का युद्ध :- अम्बूर का युद्ध 3 Aug 1749 ई० को हुआ था।

⊙ डूपले, चाँद साहब तथा मुजफ्फर जंग से सन्धि करने के बाद अपने समर्थकों को सिंहासन पर बैठाने के लिए प्रयास किया।

⊙ डूपले, चाँद साहब तथा मुजफ्फर जंग ने Karnataka के नवाब - अनवरुद्दीन पर आक्रमण किया जिसमें अनवरुद्दीन मारा गया और उसका पुत्र मोहम्मद अली भाग गया।

⊙ पूरे Karnataka पर चाँदसाहब का अधिकार हो गया।

⊙ चाँद साहब ने फ्रांसीसियों को प्रसन्न होकर पाण्डचेरी के निकट 80 गाँव पुरस्कार में दिये।

⊙ चाँद साहब ने अर्काट को अपनी राजधानी बनाया।

⊙ त्रिचनापल्ली का घेरा :- अम्बूर के युद्ध के बाद अर्काट को राजधानी बनाया गया शीघ्र ही अंग्रेजों ने अर्काट को जीत लिया।

⊙ त्रिचनापल्ली अंग्रेजों के अधिकार में था जिसे फ्रांसीसी जीतना चाहते थे।

⊙ 1752 ई० में स्ट्रेंगर लॉरेंस के सामने फ्रांसीसी सेना ने हथियार डाल दिये। फ्रांसीसी सेना की हार हुई।

- चाँद साहब की हत्या तंजौर के राजा ने कर दी।
- परिणाम :- डूपले को फ्रांस वापस बुला लिया गया।
- 1755 ई० पाण्डुचेरी की संधि के तहत दोनों दल राजाओं की आपसी झगड़ों से दूर रहने के लिए राजी हुए।
- मोहम्मद अली कर्नाटक का नवाब बना।

कर्नाटक का तृतीय युद्ध (1756-1765 ई०)

* कारण - 1756 ई० में यूरोप में सप्तवर्षीय संघर्ष के आरम्भ होते ही भारत में अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के बीच शान्ति समाप्त हो गई।
- युद्ध का तात्कालिक कारण लार्ड क्लाइव और वाटसन द्वारा बंगाल स्थित चन्द्रनगर पर अधिकार करना था।
- 1757 ई० में अंग्रेजों ने चन्द्रनगर / बालासोर / कासिमबाजार / पटना की फ्रांसीसी फैक्ट्रियों पर अधिकार कर लिया।

वांडीवास का युद्ध (1760 ई०)

Farha

- वांडीवास के प्रथम युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर आयरकूट ने एवं फ्रांसीसी सेना का नेतृत्व काउंट द लाली ने किया।
- इस युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसी सेनाओं को मद्रास तथा पाण्डुचेरी के मध्य स्थित वांडीवास नामक स्थान पर बुरी तरह पराजित किया।
- इस युद्ध के सम्बन्ध में मालेसन ने कहा है कि ;" इसे युद्ध में उस भवन को जिसे मार्टिन ड्यूमा तथा डूपले ने बनाया था, धूल - धूसरित कर दिया।"
- वांडीवास के युद्ध में हार के बाद फ्रांसीसियों का भारत से अस्तित्व समाप्त हो गया।

19-02-2019 13

* भारत में फ्रांसीसियों की हार के कारण *-

- फ्रांसीसी company सरकारी थी। इसके लाभ एवं हानि के प्रति company के डायरेक्टर उदासीन थे।
- फ्रांस की नौसेना शक्ति का समाप्त हो जाना।
- अंग्रेजी company का राजनैतिक तथा सैनिक नेतृत्व फ्रांसीसी company से अधिक उत्तम था।

Important Facts

- पुर्तगाली वायसराय वास्कोडिगामा की समाधि कोचीन में है।
- पुर्तगाली दूत अन्तानियो केब्राल, अकबर के शासनकाल में भारत आया था।
- भारत में पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को एस्तादो द इण्डिया की उपमा दी जाती है।
- कालीकट का मलयाली नाम कोषिक्कोड है।

Farha

- पुर्तगालियों ने 1510 ई० में Goa जीता और होर्मुज बन्दरगाह 1622 ई० में खो दिया।
- बंगाल का चटगाँव बन्दरगाह पुर्तगालियों के समय पोर्टोग्रान्डे की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।
- अकबर की अनुमति से हुगली में कारखाने स्थापित किये।
- शाहजहाँ की अनुमति से बंदेल में कारखाने स्थापित किये।
- अल्फांसो डी अल्बुकर्क की मजार भारत में Goa में स्थित है।

* कोरोमण्डल बन्दरगाह से डचों द्वारा निर्यात की प्रमुख वस्तु वस्त्र था।
* मद्रास का संस्थापक फ्रांसिस डे था।
* नील की सबसे अच्छी किस्म बयाना में तैयार होती थी।
* जॉन सरमन मिशन फर्रुखशियर के दरबार में आया था।
* इंटरपोलर कौन थे ?

⊙ एशिया में मुफ्त व्यापार करने वाले अंग्रेज व्यापारी।

* फ्रांसीसी सहायता से 1765 ई० में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना डिंडीगुल में हुई थी।
* लार्ड राबर्ट क्लाइव को 'स्वर्ग से उत्पन्न सेना नायक' कहा गया है।

Farha

मुगल साम्राज्य का पतन

● मुगल साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी कारणों में उत्तरकालीन दुर्बल एवं अयोग्य शासक, विदेशी आक्रमण, सरदारों का नैतिक पतन, मराठा शक्ति का उदय, धार्मिक एवं आर्थिक कारण, सेना की दुर्बलता, राष्ट्रीयता की भावना का अभाव एवं यूरोपियों का आगमन इत्यादि प्रमुख थे।

उत्तरकालीन मुगल शासक

Farha

● 3 Mar 1707 ई० को अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु के साथ एक नवीन युग का पदार्पण हुआ, जिसे उत्तरकालीन मुगल काल का नाम दिया गया।

● औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके जीवित पुत्रों - मोहम्मद मुअज्जम, मोहम्मद आजम, मोहम्मद कामबख्श में उत्तराधिकार के लिए युद्ध प्रारंभ हो गया।

● औरंगजेब की नीतियों के प्रबल विरोधी उसके पुत्र मोहम्मद अकबर और मोहम्मद सुल्तान की मृत्यु पहले ही हो चुकी थी।

● औरंगजेब की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य में कुल 21 प्रांत थे

● 1 अफगानिस्तान, उत्तरभारत में 14, दक्षिण भारत में 6 प्रांत थे।

● जिनमें से मुअज्जम - काबुल का; आजम - गुजरात का; और कामबख्श - बीजापुर का सूबेदार था।

उत्तराधिकार के लिए संघर्ष

● औरंगजेब की मृत्यु का समाचार पाकर सर्वप्रथम आजम - 'अहमदनगर' पहुँचा और 14 Mar 1707 को अपने आप को बादशाह घोषित कर दिया।

● औरंगजेब के सबसे बड़े पुत्र मुअज्जम, जो उस समय पेशावर में था, मृत्यु का समाचार पाकर आगरा के लिए रवाना हुआ। अतः "पुल - ए - शाहदौला" पहुँचकर अपने आप को बादशाह घोषित कर "बहादुर शाह" की पदवी धारण की।

19-02-2019 21:36

⊙ मुअज्जम 12 June 1707 को Agra पहुँचा। और 18 June 1707 को आगरा से 20 मील दूर सामूगढ़ के समीप जाजाओ (जजाऊ) नामक स्थान पर 'आजम और मुअज्जम' के बीच युद्ध हुआ जिसमें आजम मारा गया और मुअज्जम विजयी हुआ।

⊙ आजम के साथ उसके दो पुत्र बीदर बख्त और वलाजाह भी मारे गये।

⊙ 13 Jan 1709 को मुअज्जम और कामबख्श के मध्य हैदराबाद के निकट युद्ध हुआ जिसमें कामबख्श मारा गया। तथा मौअज्जम (बहादुर शाह प्रथम) की उपाधि के साथ दिल्ली सिंहासन पर बैठा।

Farha

बहादुर शाह प्रथम (1707-1712 ई०)

⊙ 1707 ई० में '63 वर्षीय' बहादुर शाह प्रथम, जिसे शाह आलम-I भी कहा जाता है, मुगल सम्राट बना।

⊙ बहादुर शाह ने दरबारी गुटों का सहयोग प्राप्त करने के लिए 'शान्तिपूर्ण मैत्री की नीति' अपनाई जो निम्नलिखित है -

⊙ हिन्दू सरदारों और राजाओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई।

⊙ शम्भाजी का पुत्र शाहुजी जो 1689 ई० से मुगलों के पास कैद था, उसे 1707 में मुक्त कर दिया।

⊙ बहादुर शाह ने गुरु गोविंद सिंह के साथ संधि कर मेल-मिलाप की कोशिश की।

⊙ बुन्देला सरदार छत्रसाल तथा जाट सरदार चूड़ामन के साथ मित्रता की नीति अपनाई।

⊙ बहादुर शाह ने औरंगजेब द्वारा लगायी गई जजिया कर की वसूली बन्द कर दी।

* बहादुर शाह की शांति की नीति के बावजूद सिक्ख नेता बन्दा बहादुर ने बगावत कर दी।

* बन्दा बहादुर की सबसे महत्वपूर्ण विजय 1710 में सरहिन्द की विजय थी।

* बन्दा बहादुर ने 1710 में ही Guru Nanak व गुरु गोविन्दसिंह के नाम के सिक्के जारी किये। 19-02-2019 21:37

* बहादुर शाह ने बन्दा बहादुर को लौहगढ़ नामक स्थान पर हराया था।
* 27 Feb 1712 ई० में बहादुर शाह प्रथम की मृत्यु हो गई और लौहगढ पुनः सिक्खों ने कायम ले लिया।
* बहादुर शाह प्रथम को - शाहे बेखबर की उपाधि खफी खाँ ने दी।

जहाँदर शाह (1712-13 ई०)

* बहादुर शाह की मृत्यु के बाद उसके चारों पुत्रों जहाँदरशाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान और जहाँनशाह के मध्य उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ जिसमें जहाँदरशाह को छोड़कर तीनों पुत्र मारे गये।
* जहाँदरशाह, ईरानी गुट के नेता - जुल्फिकार खाँ की सहायता से गद्दी पर बैठा।
* 51 वर्ष की आयु में 29 Mar 1712 को शासक बने जहाँदरशाह ने 'जुल्फिकार खाँ' को अपना 'वजीर' और उसके पिता 'असद खाँ' को अपना 'वकील' नियुक्त किया।
* जुल्फिकार खाँ की सलाह पर जहाँदर शाह ने अपने शासन काल में 'जजिया कर' को समाप्त कर दिया।
* जहाँदर शाह ने जयसिंह को मालवा का सूबेदार नियुक्त किया, और 'मिर्जाराजा' की उपाधि दी।
* मारवाड़ के अजीतसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया, और 'महाराजा' की उपाधि दी।
* जहाँदर शाह ने मराठा शासक को दक्कन का चौथ (कर) और वहाँ की सरदेशमुखी इस शर्त पर दी कि उनकी वसूली मुगल अधिकारी करेंगे और फिर मराठा अधिकारी को दे देंगे।
* जहाँदरशाह ने राजाराम के पुत्र शिवाजी द्वितीय को 3000 का मनसब तथा 'अनूप सिंह' का खिताब दिया।
* जहाँदरशाह, लालकुंवरि (वेश्या) से प्रेम करता था।
* जहाँदरशाह एक कमजोर व विलासी शहजादा था तथा शासन के प्रति उदासीन व लापरवाह था इस कारण लोग उसे 'लम्पट मूर्ख' कहते हैं।

19-02-2019 21:37

* अजीम-उश-शान के पुत्र फर्रुखशियर ने पटना के सूबेदार हुसैन अली खाँ और इलाहबाद के सहायक सूबेदार अब्दुल्लाह खाँ की सहायता से 'जहांदरशाह' को चुनौती दी।
* 10 feb 1713 को जहांदरशाह Agra में पूरी तरह पराजित हुआ।
* 11 feb 1713 को असद खाँ और जुल्फिकार खाँ के द्वारा - फर्रुखशियर ने जहांदरशाह को मरवा दिया और स्वयं गद्दी पर बैठा।

फर्रुखशियर [1713-1719 ई०]

* फर्रुखशियर 11 Jan 1713 को मुगल सिंहासन पर बैठा।
* उसने अब्दुल्लाह खाँ को वजीर और कुतुबुल मुल्क की उपाधि दी।
* उसने हुसैन अली खाँ को मीरबख्शी नियुक्त किया और अमीर-उल-उमरा की उपाधि दी।
* उसने जुल्फिकार खाँ की हत्या करवा दी और उसके पिता असद खाँ को कैद में डाल दिया।
* उसने मारवाड़ के राजा अजीत सिंह को हराया, हार के बाद अजीत सिंह ने अपनी पुत्री का विवाह फर्रुखशियर से कर दिया।
* फर्रुखशियर के शासन काल में सिक्ख नेता बन्दाबहादुर को गुरुदासपुर के किले से बन्दी बनाकर दिल्ली लाया गया। और उसकी हत्या 19 June 1716 को कर दी।
* फर्रुखशियर की सबसे बड़ी उपलब्धि बन्दाबहादुर के नेतृत्व में "सिक्खों की हार" थी।
* सैय्यद बन्धुओं ने मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ (साहू) की सहायता से 28 feb 1719 को फर्रुखशियर की गला दबाकर हत्या कर दी।
* फर्रुखशियर एक दुर्बल, कायर, सम्राट था इसलिए इसे मुगल वंश का 'घृणित कायर सम्राट' कहा जाता था।

Farha

19-02-2019 21:38

रफी-उद-दरजात (28 Feb – 4 June 1719)

* फर्रुखसियर की मृत्यु के बाद सैय्यद बन्धुओं ने रफी-उस-शान के पुत्र रफी उद-दरजात को गद्दी पर बैठाया।
* यह नाम मात्र का और सबसे कम समय (3 माह 4 दिन) तक शासन करने वाला मुगल सम्राट था।
* इसके शासन काल में अकबर द्वितीय के पुत्र नेकसियर ने सैय्यद बन्धुओं के विरुद्ध विद्रोह किया।
* 4 June 1719 को क्षयरोग के कारण बादशाह की मृत्यु हो गई।

रफी-उद-दौला (6 June – 17 September 1719ई)

◎ सैय्यद बन्धुओं ने रफी-उस-शान के दूसरे पुत्र रफी उद-दौला को शाहजहाँ द्वितीय की उपाधि दी और सम्राट के रूप में सिंहासन पर बैठाया।
◎ इसकी पेचिस रोग के कारण 17 September 1719 को फतेहपुर सीकरी में मृत्यु हो गई।

मुहम्मदशाह (1719–1748ई०) Farha

* सैय्यद बन्धुओं ने, जहाँनशाह के 18 वर्षीय पुत्र रौशन अख्तर को मुहम्मदशाह के नाम से 1719 में गद्दी पर बैठाया।
* सार्वजनिक मामलों के प्रति उसकी उदासीनता तथा सुरा और सुन्दरी में तल्लीनता के कारण उसे 'मुहम्मद शाह रंगीला' कहा गया।
* इसके शासन काल में हिजड़ों तथा महिलाओं के एक वर्ग का प्रभुत्व था।
* मुहम्मदशाह के नये मित्रों में सबसे योग्य दक्कन का शासक चिनकिलिच खाँ (निजामुल मुल्क) था।
* हैदर खाँ ने 9 Oct 1720 को सैय्यद हुसैन अली की हुक्का भौंक कर हत्या कर दी।
◎ अब्दुल खाँ को 1722 में जहर देकर मार डाला गया।
◎ मुहम्मदशाह के समय में ही बंगाल, बिहार, तथा उड़ीसा में मुर्शिदकुली ने अवध में शआदत खाँ एवं दक्कन में निजामुल मुल्क ने भरतपुर और मथुरा में मदन सिंह ने स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की।

19-02-2019 21:39

- इसके शासनकाल में नादिरशाह का आक्रमण हुआ।
- मुहम्मद शाह के शासन काल में ही अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर 1748 ई० में आक्रमण किया।
- अहमदशाह अब्दाली, नादिरशाह का उत्तराधिकारी था।
- मुहम्मदशाह ने 1720 ई० में अन्तिम रूप से जजिया कर को प्रतिबन्धित कर दिया था।
- मुहम्मदशाह रंगीला के समय फूल वालों की सैर नामक उत्सव प्रारम्भ हुआ जो ख्वाजा कुतुबसाहब की दरगाह (दिल्ली) पर आयोजित होता है।

नादिरशाह का आक्रमण (1739 ई०)

- नादिर शाह का जन्म 1688 ई० में खुरासान में हुआ था।
- भारत पर उसके आक्रमण का तात्कालिक कारण था मुगलों द्वारा फारस के साथ राजनीतिक सम्बन्धों का विच्छेद कर लेना।
- नादिर शाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता था।
- नादिरशाह ने 11 June 1739 ई० को गजनी को जीता।
- 29 June 1738 को नादिरशाह ने काबुल पर अधिकार किया।
- नादिरशाह ने अटक के स्थान पर सिन्धु नदी को पार किया। और लाहौर के मुगल गवर्नर को हराकर February 1739 ई० में पंजाब पर कब्जा कर लिया।

करनाल का युद्ध

- मुगल सम्राट नादिरशाह को रोकने के लिए निजामुलमुल्क, कमरुद्दीन, खान दौरान, शआदत खाँ के साथ पंजाब की ओर आगे बढ़ा।
- मुगल सेना न तो युद्ध के लिये तैयार थी और न ही कोई रणनीति थी इस कारण यह युद्ध मात्र 3 घण्टे चला खानदौरान युद्ध में मारा गया और शआदत खाँ को बन्दी बना लिया गया।
- निजामुल मुल्क ने शांतिदूत की भूमिका निभाते हुए नादिरशाह को 50 लाख रु० देना तय था।
- शआदत खाँ के स्थान पर निजामुलमुल्क को मीर बख्शी बनाये जाने के कारण शआदत खाँ, नादिरशाह से जा मिला एवं उसे दिल्ली पर आक्रमण करने का लालच दिया।

19-02-2019 21:40

नादिर शाह का दिल्ली में प्रवेश

★ 20 Mar 1739 को नादिर शाह दिल्ली पहुँचा, अपने नाम खुत्बा पढ़वाया तथा अपने नाम के सिक्के चलवाये।

★ दिल्ली में यह अफवाह फैल गई, कि नादिर शाह की मृत्यु हो गई इस वजह से दिल्ली में नादिर शाह के 700 सैनिक मार दिये गये। इससे क्रोधित होकर नादिर शाह ने कत्ल-ए-आम का हुक्म दे दिया जिसमें 30,000 लोग मारे गये। मोहम्मद शाह की प्रार्थना पर नादिर शाह ने यह आज्ञा वापस ली।

नादिर शाह की वापसी

Farha

⊙ दिल्ली से वापस लौटते समय नादिर शाह अपने साथ - 30,00,00,000 नकद तथा सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात के अतिरिक्त 10,000 ऊँट, 130 लेखपाल, 100 हिजड़े, 200 लोहार, 200 बढ़ई और 100 पत्थर तराश, 7000 घोड़े अपने साथ लेकर गया।

★ नादिर शाह, शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया मयूर सिंहासन - (तख्त-ए-ताउस) जिसकी कीमत - 2,00,00,000 Rs थी - अपने साथ ले गया।

★ नादिर शाह विश्व प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी अपने साथ ले गया।

★ मुगल सम्राट मोहम्मद शाह ने अपनी पुत्री का विवाह नादिर शाह के पुत्र नसीरुल्लाह से कर दिया।

★ नादिर शाह को कश्मीर एवं सिंध के पश्चिम प्रदेश मिले।

★ नादिर शाह ने मोहम्मद शाह को पुनः मुगल साम्राज्य का सम्राट घोषित कर दिया और खुतबा पढ़ने एवं सिक्के चलाने के अधिकार लौटा दिये।

★

सम्राट अहमदशाह (1748 - 1754 ई०)

⊙ यह मोहम्मदशाह का पुत्र था जिसका जन्म ऊधमबाई नर्तकी के गर्भ से हुआ था।

⊙ इसके शासनकाल में "अहमदशाह अब्दाली" ने भारत पर आक्रमण किया था।

⊙ इसने अपने प्रिय हिजड़ों के सरदार जावेद खाँ को नवाब बहादुर की उपाधि दी।

19-02-2019 21:40

⊙अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर कुल 7 बार आक्रमण किया।

अहमदशाह अब्दाली के भारत पर आक्रमण

⊙1747 में नादिर शाह की मृत्यु के बाद अहमदशाह अब्दाली अफगानिस्तान का स्वतंत्र शासक बना।
⊙ पंजाब के सूबेदार - शाहनवाज खाँ ने अब्दाली को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमन्त्रित किया था।
⊙ अब्दाली का भारत पर आक्रमण करने का मुख्य उद्देश्य - भारत को लूटना था।
⊙अहमदशाह अब्दाली को 'दुर्रे दुर्रानी' अर्थात् 'युग का मोती' की उपमा दी गई है।
⊙1748 ई० में उसने पहली बार पंजाब पर आक्रमण किया जो असफल रहा।
⊙ 1749 ई० में उसने दूसरी बार पंजाब के गवर्नर मुईनुलमुल्क को हराया।
⊙1752 ई० में उसने पंजाब पर तीसरा आक्रमण किया जिसमें उसे 'सिंध और पंजाब' प्रदेश मिले।
⊙ January 1757 में अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली में प्रवेश किया तथा मथुरा एवं आगरा को लूटा और लौटते समय अपने आलमगीर द्वितीय को सम्राट, इमादुल मुल्क को वजीर एवं नजीबुद्दौला को मीरबख्शी बनाया।
⊙अब्दाली ने पुनः भारत पर पाँचवा आक्रमण किया, जिसे पानीपथ का तृतीय युद्ध (14 Jan 1761) हुआ, जिसमें मराठों की हार हुई।
⊙पानीपथ के तृतीय युद्ध के समय मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय था।

⊙ आलमगीर द्वितीय (1754-1758 ई०)

Farha

★इसका वास्तविक नाम अजीजुद्दीन था।
★ इमादुल मुल्क की कृपा से मुगल सिंहासन पर बैठा।
★इसने औरंगजेब की उपाधि आलमगीर धारण की और अपने आप को 'आलमगीर द्वितीय' के नाम से घोषित किया।

19-02-2019 21:41

- गाजीउद्दीन (इमादुल मुल्क) ने उसकी हत्या करवा दी थी।
- इस सम्राट के शासन काल में 1757 में प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी की जीत हुई और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव पड़ी।

शाह आलम द्वितीय (1759-1806 ई०)

- इसका वास्तविक नाम अली गौहर था।
- यह आलमगीर द्वितीय का पुत्र था।
- अपने पिता की हत्या के समय अली गौहर पटना में था, जहाँ इसने शाह आलम द्वितीय की उपाधि धारण की।
- वज़ीर गाजीउद्दीन के कारण शाहआलम द्वितीय 12 वर्ष तक दिल्ली में प्रवेश नहीं कर पाया।
- 1764 ई० में बक्सर का युद्ध हुआ जिसमें शाह आलम द्वितीय हार गई।
- हारने के बाद शाह आलम द्वितीय ने 1765 ई० में अंग्रेजों से 'इलाहाबाद की संधि' की जिसमें उसने अंग्रेजो को उड़ीसा, बिहार एवं बंगाल की सूबेदारी दे दी।
- 30 July 1788 को गुलाम कादिर ने इसे अंधा कर क़ैद में डाल दिया, मराठों ने उसे क़ैद से निकालकर पुनः गद्दी पर बैठा दिया और गुलाम कादिर को फाँसी दे दी।
- 1806 ई० में शाह आलम द्वितीय की मृत्यु हो गई।
- यह प्रथम मुगल बादशाह था जो अंग्रेजों का पेंशनर बना।

अकबर शाह द्वितीय (1806-1837 ई०)

- शाह आलम द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अकबर द्वितीय अंग्रेज्यों के संरक्षण में बादशाह बना।
- इसके समय में 1835 ई० में मुगलों की टकसाले बंद होगई और अंग्रेजी सिक्कों का प्रचलन आरम्भ हुआ।
- इसने अपनी पेंशन प्राप्त करने हेतु इत के रूप में राममोहनराय को 'राजा' की उपाधि देकर 1831 ई० में Britain भेजा।
- 1837 ई० में इसकी मृत्यु हो गई।

19-02-2019 21:41

- अंग्रेजों को सर्वप्रथम दीवानी का अधिकार, शाह आलम द्वितीय ने दिया था।
- मुगलानी बेगम मुगल बादशाह आलमगीर द्वितीय के समय पंजाब की एक महिला सूबेदार थीं।
- रुहेला सरदार, नजीब खाँ, अहमदशाह अब्दाली का विश्वासपात्र था।

मराठा साम्राज्य

* मराठा शब्द की उत्पत्ति राष्ट्र शब्द से हुई है।
* महाराष्ट्र में इनकी शक्ति का उदय हुआ।
* दक्षिण पश्चिम भारत का वह भाग जो पश्चिम में अरब सागर से लेकर उत्तर में सतपुड़ा पर्वत तक फैला हुआ है। और जिसमें बम्बई, कोंकण, बरार, मध्यभारत का कुछ भाग और हैदराबाद राज्य का एक तिहाई भाग सम्मिलित है, मराठा वाड़ा के नाम से जाना जाता था।
* ग्राण्ड डफ के अनुसार, "मराठों का उदय आकस्मिक अग्निकाण्ड की भाँति हुआ।"
*

शिवाजी (1627-1680 ई०)

⊙ शिवाजी का जन्म 20 April 1627 ई० को शिवनेर के पहाड़ी दुर्ग (पूना) में हुआ था।
⊙ इनके पिता का नाम शाह जी भोंसले और माता का नाम जीजाबाई था।
⊙ शिवाजी के गुरु समर्थ गुरु रामदास थे।
⊙ शिवाजी के संरक्षक दादाजी कोंडदेव थे।
⊙ शिवाजी का प्रथम राज्याभिषेक 6 June 1674 ई० को (रायगढ़) में हुआ था।
⊙ श्री गंगा भट्ट द्वारा हुआ था।
⊙ शिवाजी का द्वितीय राज्याभिषेक 24 Sep 1674 ई० को तांत्रिक विधि से काँची के निश्चलपुरी गोस्वामी तांत्रिक द्वारा कराया गया।
* छत्रपति, हिन्दु धर्मोद्धारक, राजा शिवाजी की उपाधियाँ थीं।

* - शिवाजी की प्रारम्भिक विजयें

* सर्वप्रथम शिवाजी ने 1646 ई० में तोरण का किला जीता।
* शिवाजी की दूसरी विजय 1646 ई० में ही पुरन्दर किले की थी।
* इसके बाद शिवाजी ने 1654 ई० में पुरंदर का किला जीता।
* 1656 ई० में शिवाजी ने जावली एवं रायगढ़ पर अधिकार किया।
* 1657 ई० में पहली बार शिवाजी का मुकाबला मुगलों से हुआ।

11-03-2019 13:38

* 1657 ई० में शिवाजी ने कोंकण प्रदेश के कल्याण, भिवण्डी एवं माहुल के किलों को जीता।

अफ़ज़ल खाँ की हत्या

* बीजापुर के सुल्तान ने 1659 ई० में अपने प्रधान सेनापति अफ़ज़लखाँ को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।
* अरे दरबार में अफ़ज़ल खाँ ने कहा कि, "अपने घोड़े से बिना उतरे ही इस पहाड़ी चूहे को बन्दी बना लूँगा।"
* शिवाजी के दो अंगरक्षक जीवमहल और सम्भूजी कावजी थे।
* शिवाजी ने 1659 ई० में ही अफ़जल खाँ की हत्या कर दी।
* 1659 ई० में औरंगज़ेब ने शिवाजी को समाप्त करने के लिये - शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया परन्तु 1663 ई० में शिवाजी ने रात में पूना के महल पर आक्रमण किया और शाइस्ता-खाँ भाग गया।

सूरत की प्रथम लूट

* शाइस्ता खाँ को हराने के बाद शिवाजी ने 1664 ई० में सूरत बंदरगाह को लूटा।
* शिवाजी ने सेठ साहूकारों को लूटा किन्तु अंग्रेजों एवं डचों की कोठियों को कोई हानि नहीं पहुँचाई।
* इस लूट में शिवाजी को 1 Crore से अधिक धनराशि मिली।

पुरन्दर की संधि (1665 ई०)

* शाइस्ता खाँ की असफलता और सूरत की लूट से त्रस्त होकर औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए आमेर के राजा जयसिंह को भेजा।
* जय सिंह के साथ युद्ध में शिवाजी की हार हुई तथा शिवाजी ने 22 June 1665 ई० को 'पुरन्दर की सन्धि' कर ली।
* इस संधि के तहत शिवाजी ने 23 किले मुगलों को दे दिये और 12 किले अपने पास रखे।
* शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुगल सम्राट को सहायता देने का वचन दिया।
* 1666 ई० में राजा जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आये परन्तु उचित सम्मान न मिलने पर वे उठकर चल दिये। इससे नाराज होकर औरंगजेब ने शिवाजी को जयपुर भवन (Agra) में कैद कर के रखा।

11-03-2019 13:39

* औरंगजेब ने शिवाजी को 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी।
* 1670 ई० में शिवाजी ने पुनः मुगलों से युद्ध शुरू किया और पुरन्दर की सन्धि द्वारा खोये हुए अनेक किलों को जीत लिया।
* 1670 ई० में शिवाजी ने सूरत को दूसरी बार लूटा।
* 1672 ई० में शिवाजी ने सूरत को तीसरी बार लूटा।
* 1673 ई० में शिवाजी ने पन्हाला के दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
* 1670-1674 ई० तक शिवाजी ने अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर लिया।

शिवाजी का कर्नाटक अभियान (1677 ई०)

* शिवाजी का अन्तिम और उनके जीवन का सबसे बड़ा अभियान कर्नाटक पर आक्रमण था। जिसमें वेलौर, तंजौर और जिंजी आदि प्रमुख नगर थे।
* 1678 ई० में शिवाजी ने जिंजी के किले को जीता, यह उनकी अन्तिम विजय थी।
* शिवाजी ने 'जिंजी' को अपने दक्षिण भारत की राजधानी बनाया।
* सीदियों पर अधिकार करने के लिए शिवाजी ने नौसेना का निर्माण किया परन्तु शिवाजी पुर्तगालियों से गोआ तथा सीदियों से चौल और जंजीरा को ना जीत सके।
* 13 April 1680 ई० को शिवाजी ज्वर से पीड़ित हो गये और अन्त में उनकी मृत्यु हो गई।
* पुतली बाई शिवाजी की मृत्यु के बाद सती हो गईं।

शिवाजी का प्रशासन

Farha

* शिवाजी का प्रशासन अष्टप्रधान अर्थात् आठ (8) मंत्रियों की एक परिषद द्वारा चलाया जाता था।
* अष्टप्रधान परिषद का प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होता था, सभी मंत्री शिवाजी के उच्च सचिव के समान कार्य करते थे।

11-03-2019 13:39

अष्टप्रधान (मंत्रिपरिषद्)

[i] पेशवा (प्रधानमंत्री)

- यह राजा का प्रधानमंत्री होता था। इसका कार्य सम्पूर्ण राज्य की देखभाल करना, सरकारी पत्रों तथा दस्तावेजों पर राजा के नीचे मुहर लगाता था।

[ii] अमात्य (पन्त व मजूमदार)

- यह वित्त एवं राजस्व मंत्री होता था। शिवाजी के अमात्य रामचंद्रपंत थे।

[iii] वाकियानवीस (मंत्री)

- राजा एवं दरबार के दैनिक कार्यों की देखभाल करना। यह वर्तमान समय के गृहमंत्री की भांति होता था।

[iv] सुमंत (दबीर)

- यह राज्य का विदेश मंत्री होता था।

Farha

[v] चिटनिस/सचिव/शुरुनवीस

- यह पत्राचार विभाग का प्रमुख था इसका कार्य राजकिय पत्रव्यवहार का कार्य देखना तथा परगनों के हिसाब की जाँच करना था।

[vi] सेनापति (सर-ए-नौबत)

- सेना की भर्ती, संगठन, रसद आदि का प्रबन्ध करना इसका प्रमुख कार्य था।

[vii] पण्डितराव (सद्र)

- धार्मिक मामलों में यह राजा को परामर्श देता था।

[viii] न्यायाधीश

- राजा के बाद यह मुख्य न्यायाधीश होता था इसके अधिकार क्षेत्र में राज्य के सभी दीवानी तथा फौजदारी मामले आते थे।

11-03-2019 13:39

⊙ पण्डितराव एवं न्यायाधीश को छोड़कर सभी युद्ध में भाग लेते थे।

प्रान्तीय शासन

* शिवाजी ने अपने राज्य को चार प्रान्तों में बाँट रखा था।
* प्रत्येक प्रान्त सर-ए-सूबेदार के अधीन होता था।

⊙ **उत्तरी प्रान्त** :- बम्बई के उत्तर में सूरत व सल्हेर दुर्ग से लेकर इना तक का भाग शामिल था।
उत्तरी प्रान्त मोरो त्रम्बयक पिंगले के अधीन था।

⊙ **दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त** :- इसमें दक्षिणी कोंकण प्रदेश या सामुद्रीतट सम्मिलित था। यह क्षेत्र अन्नाजी दत्तो के अधीन था।

⊙ **दक्षिण-पूर्वी प्रान्त** :- इस क्षेत्र में सतारा, कोलाहपुर, झांगली आदि क्षेत्र शामिल थे। यह क्षेत्र दत्तो जी पंत के अधीन था।

⊙ **दक्षिण प्रान्त** :- इसमें जिंजी और आस-पास का क्षेत्र शामिल था। इसका प्रमुख रघुनाथ पंथ हनुमन्ते था।

* शिवाजी ने देश को सूबों, सरकारों, परगनों और मौजों में बाँटने की पुरानी प्रणाली के बदले प्रान्तों को महालों में विभक्त किया।
* महालों को तर्फों तथा तर्फों को मौजों में बाँटा।
* शिवाजी के प्रान्तीय शासन में गाँव सबसे छोटी इकाई थी।
* शिवाजी ने अधिकारियों को नकद वेतन प्रदान किया था।
*

राजस्व प्रशासन

Farha

* शिवाजी की राजस्व व्यवस्था रैय्यतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी।
* शिवाजी ने अन्नाजी दत्तो के अधीन भूमि की विस्तृत माप कराई।
* माप का आधार जरीब थी। जिसे काठी नाम से भी जाना जाता था।
* शिवाजी ने भूमि को ठेके पर देने की प्रथा को समाप्त कर उत्पादन के अनुमान पर किसान से लगान निर्धारित किया।
* आरम्भ में शिवाजी ने उपज का 33% भाग 'कर' के रूप में वसूला बाद में इसे बढ़ाकर 40% कर दिया।

11-03-2019 13:40

* कृषकों को तकाबी ऋण भी प्रदान किया जाता था।
* गाँव के प्राचीन पैत्रक अधिकारी पाटिल और जिले के देशमुख। देशपाण्डे होते।

⊙ चौथ :- चौथ विजित राज्यों के क्षेत्रों से उपज के एक-चौथाई ($\frac{1}{4}$) के रूप में लिया जाता था।

⊙ सरदेशमुखी :- यह एक अतिरिक्त कर था, जो आय का 10% या $\frac{1}{10}$ भाग के रूप में होता था।

सैन्य प्रशासन

* शिवाजी की सैन्य व्यवस्था में किलों का प्रमुख स्थान था। शिवाजी के पास लगभग 280 किले थे।
* घुड़सवार शिवाजी की सेना के प्रमुख भाग थे जिन्हें 'पागा' कहा जाता था।
* सर-ए-नौबत घुड़सेना का सबसे बड़ा सेनापति था।
* घुड़सवार दो प्रकार के बर्गी और शिलेदार थे।
* बरगीरों को सरकार घोड़े, हथियार आदि उपलब्ध कराती थी जबकि शिलेदार स्वयं के घोड़े व अस्त्र रखते थे।
* शिवाजी की हस्ति सेना में 1260 हाथी थे और उनके पास 8 तोपें थी।
* शिवाजी की नौसेना का मुख्यालय कोलाबा में था और उनके पास 200 नावों का बेड़ा था।

मंत्री के अधीन आठ प्रमुख अधिकारी

दीवान - सचिव
मजूमदार - लेखा परीक्षक तथा लेखाकार
फडनिस - उप लेखा परीक्षक
चिटनिस - पत्राचार लिपिक
जमादार - खजांची
सबनिस - कार्यालय प्रभारी
करखानिस - रसद अधिकारी
पोतनिस - रोकड़िया

11-03-2019 13:40

न्याय व्यवस्था

* शिवाजी की न्याय व्यवस्था 'प्राचीन हिन्दू कानून' पर आधारित थी।
* गाँवों में फौजदारी के मुकदमे पटेल निपटाया करता था।
* अन्तिम न्यायालय को हुजूर-हाजिर-मजलिस कहा जाता था।
* अन्तिम / सर्वोच्च न्यायाधीश / कानून निर्माता छत्रपति था।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

* शिवाजी की मृत्यु के बाद 21 Apr 1680 ई० को 10 वर्ष की आयु में राजाराम का राज्याभिषेक रायगढ़ में हुआ।
* इसके कुछ समय बाद ही शिवाजी के दो पुत्रों (दो पत्नियों से उत्पन्न) शम्भाजी एवं राजाराम के बीच उत्तराधिकार को लेकर विवाद हुआ।
* अन्ततः राजाराम को गद्दी से उतारकर शम्भाजी को 20 July 1680 में गद्दी पर बैठाया गया।

शम्भाजी (1680-89 ई०)

* शम्भाजी शिवाजी के छोटे पुत्र थे। Father
* शिवाजी ने शम्भाजी को पन्हाला किले में कैद कर दिया था।
* 16 Jan 1681 ई० में इनका राज्याभिषेक हुआ, इन्होने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
* शम्भाजी की माता का नाम सांई बाई था।
* शम्भाजी के गुरु केशवभट्ट व शिक्षक उमाजी पण्डित थे।
* इनकी पत्नी का नाम येसूबाई था जिनसे पुत्र शाहू उत्पन्न हुआ।
* शम्भाजी ने नीलोपंत को अपना चेशवा नियुक्त किया।
* शम्भाजी ने कन्नौज के 'कविकलश' नामक विद्वान ब्राह्मण को अपना सलाहकार नियुक्त किया तथा पेशवा से भी ऊँचा पद प्रदान किया।
* इनके समय में अष्ठ प्रधान में विघटन हो गया।
* शम्भाजी ने औरंगजेब के पुत्र अकबर को संरक्षण दिया था जिसके कारण औरंगजेब ने शम्भाजी की हत्या करवा दी। शम्भाजी के साथ ही कवि-कलश की भी हत्या करवा दी।

11-03-2019 13:40

राजाराम (1689 - 1700 ई०)

* शम्भाजी की मृत्यु के बाद राजाराम पुनः गद्दी पर बैठा।
* राजाराम स्वयं को शाहू (शम्भाजी का पुत्र) का प्रतिनिधि कहता था।
* राजाराम के समय में ही प्रतिनिधि पद का सृजन हुआ जो पेशवा से ऊपर एवं छत्रपति से नीचे का पद था।
* इस प्रकार अष्टप्रधान में नौ मंत्री हो गये।
* 1689 ई० में ही औरंगज़ेब के आक्रमण के भय से राजाराम ने रायगढ़ को छोड़कर जिंजी में शरण ली एवं 8 वर्षों तक जिंजी को राजधानी बनाकर वहीं रहा।
* औरंगजेब ने 1689 ई० में रायगढ़ पर आक्रमण कर शाहू को बंदी बना लिया था। जो औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई०) तक कैद रहा।
* 1698 ई० में राजाराम जिंजी से वापस आया और सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
* 1700 ई० में राजाराम की सतारा में मृत्यु हो गई।

ताराबाई (1700 - 1707 ई०)

Footer

* राजाराम की मृत्यु के बाद अल्पवयस्क पुत्र शिवाजी द्वितीय मराठों का शासक बना तथा राजाराम की पत्नी ताराबाई संरक्षिका बनी।
* ताराबाई ने रायगढ़, सतारा तथा सिंहगढ़ आदि किलों को मुगलों से छीन लिया।
* 12 Oct 1707 को शाहू तथा ताराबाई के मध्य खेड़ा का युद्ध हुआ। जिसमें शाहू, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजयी हुआ।

शाहूजी (1707 - 1749 ई०)

* शम्भाजी के पुत्र शाहू का 1708 ई० में राज्याभिषेक हुआ इन्होंने सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
* 1731 ई० की 'वारना की संधि' द्वारा मराठा राज्य दो भागों में बट गया उत्तर में सतारा राज्य जो शाहू के अधीन था।
दक्षिण में कोलाहपुर का राज्य जो शिवाजी द्वितीय के अधीन था।
* 1708 ई० में शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को 'सेनाकर्ते' का पद प्रदान किया।

11-03-2019 13:40

* शाहू ने 1713 ई० में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया। इस नियुक्ति के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया।
* 1714 ई० में राजाराम की दूसरी पत्नी राजसबाई ने ताराबाई एवं उसके पुत्र शिवाजी द्वितीय को कैद कर लिया और अपने पुत्र शम्भाजी द्वितीय के साथ कोल्हापुर में बस गई।
* ताराबाई के कहने पर राजाराम द्वितीय को छत्रपति बनाया गया।
* 1750 ई० में बालाजी बाजीराव से राजाराम द्वितीय ने संगोला की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार पेशवा मराठा संगठन का वास्तविक प्रधान बन गया और मराठा छत्रपति सतारा में नाममात्र के शासक।

पेशवा के समय मराठा शक्ति का उत्कर्ष

*– बालाजी विश्वनाथ

Farha

- बालाजी विश्वनाथ को मराठा राज्य का दूसरा संस्थापक माना जाता है।
- बालाजी के पूर्वज जंजीरा राज्य में श्रीवर्धन के वंशानुगत 'कर' (Tax) संग्रह कर्ता थे।
- बालाजी ब्राह्मण था जो पेशवाओं के क्रम में सातवाँ (7th) था।
- शाहू ने 1708 ई० में बालाजी को सेनापति और 1713 ई० में पेशवा नियुक्त किया।

दिल्ली संधि (मुगल मराठा संधि / बालाजी-सैय्यद-हुसैन संधि)

* फर्रुखशियर को सिंहासन से हटाये जाने के कारण 1719 ई० 'दिल्ली की संधि' हुई।
* यह संधि पेशवा बालाजी विश्वनाथ और सैय्यद हुसैन अली (मुगलों की ओर से) के बीच हुई।
* रिचर्ड टैम्पल ने इस संधि को 'मराठों का मैग्नाकार्टा' की संज्ञा दी।
* इस संधि पर हस्ताक्षर करने वाला मुगल शासक रफी उद दरजात था।
* 2 Apr 1720 ई० को बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु हो गई।

11-03-2019 13:41

बाजीराव प्रथम (1720 - 1740 ई०)

* इन्होंने मराठा शक्ति को चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाया।
* मुगल साम्राज्य की तात्कालिक स्थिति पर बाजीराव ने कहा, "हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएँ तो स्वयंगिर जायेंगी।"

पालखेड़ा का युद्ध (7 March 1728)

⊙ इसमें बाजीराव ने निजाम को परास्त किया। इस युद्ध में हारने के बाद निजाम ने मुंशी शिवगाँव की संधि की। इस संधि के बाद दक्कन में मराठा सर्वोच्चता स्थापित हो गई।

दुरई - सराय की सन्धि (1738 ई०)

* यह सन्धि 'बाजीराव प्रथम' और निजाम के मध्य हुई।
* इस सन्धि द्वारा मालवा और नर्मदा तथा चम्बल नदी के बीच की समस्त भूमि बाजीराव को मिली।
* इस संधि के द्वारा 50 Lakh Rs. बाजीराव को मिला।

डभोई का युद्ध (1731 ई०)

Farha

* यह युद्ध बाजीराव प्रथम एवं त्र्यम्बक राव के मध्य हुआ। जिसमें - बाजीराव की जीत हुई।
* 1738 ई० में गुजरात को मराठा राज्य में मिला लिया गया।

शम्भाजी द्वितीय से सम्बन्ध

* शाहू का चचेरा भाई शम्भाजी-II कोल्हापुर का शासक था।
* 1730 ई० में वार्ना नदी के निकट शम्भाजी द्वितीय की हार हुई और April 1731 ई० में 'वारना की संधि' हुई।

अमझेरा का युद्ध (1728 ई०)

* बाजीराव-I ने मालवा के सूबेदार - गिरिधर बहादुर को हराया और इस युद्ध में गिरिधर बहादुर का चचेरा भाई दया बहादुर मारा गया।
* अन्त में 1738 ई० की दुरई - सराय की संधि से मुगल बादशाह के वजीर निजाम - उल - मुल्क ने मालवा - मराठों को सौंप दिया।

11-03-2019 13:41

बुन्देलखण्ड की विजय

* 1728 ई० में मराठों ने मुगलों द्वारा सभी विजित बुन्देलखण्डों के सभी प्रदेशों को छीन लिया तथा छत्रसाल को वापस करदिया
* छत्रसाल ने पेशवा की शान में एक दरबार का आयोजन किया, दरबार में एक सुन्दर नर्तकी मस्तानी को पेश किया।
* छत्रसाल ने काल्पी, सिरोंज, सागर, भाटा, झाँसी तथा ह्रदय नगर पेशवा को जागीर के रूप में भेंट किया।

दिल्ली पर आक्रमण

* 29 Mar 1737 ई० को बाजीराव प्रथम दिल्ली 500 घुड़सवारों के साथ पहुँचा।
* तीन दिन दिल्ली में रहने के बाद बाजीराव को मालवा की सूबेदारी एवं 13 Lakh वार्षिक धनराशि की अदायगी का आश्वासन दिये जाने पर वापस लौट गया।

भोपाल का युद्ध (7 July 1738 ई०)

* इसमें बाजीराव ने निजाम को घेर लिया एवं संधि करने के लिए विवश कर दिया।
* 1738 ई० में दुर्रई-सराय की संधि हुई जो पूर्णतः मराठों के पक्ष में थी।

बसीन की विजय (1739 ई०)

Farha

* किसी यूरोपीय शक्ति के विरुद्ध बसीन की विजय मराठों की पहली जीत थी।
* मराठों ने 1739 ई० में पुर्तगालियों से बसीन को छीन लिया और साल्सेट पर भी अधिकार कर लिया।

कोंकण का अभियान

* 1736 ई० में बाजीराव के भाई चिमनाजी अप्पा ने सीदीसत को एक युद्ध में मार दिया जिसके परिणाम स्वरूप सीदियों से एक संधि हो गई और कोंकण प्रदेश पर पेशवा का प्रभुत्व हो गया।

11-03-2019 13:41

बालाजी बाजीराव (1740-61 ई०)

* पेशवा बाजीराव की मृत्यु के बाद उसके बड़े पुत्र बालाजी बाजीराव को 'पेशवा' नियुक्त किया गया।
* बालाजी - बाजीराव का अन्य नाम नाना साहब था।
* इसने मराठा शासक राजाराम द्वितीय से सैंगोला समझौता करके राजा के सम्पूर्ण अधिकार स्वयं ले लिये।
* 1742 ई० में झाँसी मराठों का उपनिवेश बन गया।
* 1751 ई० में उड़ीसा पर मराठों का अधिकार हो गया।
* सिंध खेड़ा का युद्ध 1757 में मराठों ने निजाम से कई प्रदेश छीने।
* उदगीर के युद्ध 1760 ई० में मराठों ने निजाम को हराया, औरंगाबाद, दौलताबाद, अहमदनगर, असीरगढ़ और बुरहानपुर आदि के दुर्ग मराठों को प्राप्त हुए।

पानीपथ का तृतीय युद्ध (14 Jan 1761)

* पानीपथ का तृतीय युद्ध बालाजी बाजीराव के समय में हुआ था।
* यह युद्ध 14 Jan 1761 ई० में हुआ।
* यह युद्ध अहमदशाह अब्दाली तथा मराठों के मध्य हुआ, युद्ध में मराठों की हार हुई।

माधवराव प्रथम (1761-72 ई०)

Fasha

* 23 June 1761 ई० को पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गई।
* उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र माधवराव पेशवा बना।
* माधवराव प्रथम ने हैदराबाद के निजाम एवं मैसूर के हैदर अली को चौथ देने के लिए बाध्य किया।
* माधवराव के काल में मुगलबादशाह शाह आलम द्वितीय ने 1772 ई० में मराठों की संरक्षिता को स्वीकार किया।
* माधवराव प्रथम की मृत्यु 18 Nov 1772 ई० को क्षयरोग से हो गई।
* ग्राण्डडफ के अनुसार, "उसकी मृत्यु मराठों के लिए पानीपथ की पराजय से भी अधिक हानिकारक सिद्ध हुई।"

11-03-2019 13:41

* पेशवा माधवराव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायण राव पेशवा बना।
* रघुनाथ राव ने नारायण राव पेशवा की हत्या कर दी और स्वयं पेशवा बना।
*

माधव नारायण राव (1774-95 ई०)

* यह नारायण राव का पुत्र था।
* नाना फड़नवीश के नेतृत्व में मराठा राज्य की देखभाल के लिए 'बारा-भाई कौंसिल' की नियुक्ति की।
* Oct 1796 ई० में पेशवा माधव नारायण राव ने आत्महत्या कर ली।

बाजीराव द्वितीय (1796-1818)

* बाजीराव द्वितीय राघोबा का पुत्र था।
* March 1800 ई० में नाना फडनवीश की मृत्यु हो गई।
* फडनवीश की मृत्यु के बाद मराठा शक्ति पेशवा बाजीराव द्वितीय के हाथ में रही।
* बाजीराव द्वितीय को अंग्रेजो ने 8 lakh Rs. पेंशन देकर बिठूर भेज दिया।
* इसका उत्तराधिकारी इसका दत्तक पुत्र नानासाहब (धोंधू पंत) हुआ, जिसने 1857 के विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आंग्ल-मराठा युद्ध (

Partha

सूरत की संधि

* 7 Mar 1775 ई० को बम्बई की अंग्रेजी सरकार एवं रघुनाथराव के मध्य 'सूरत की संधि' हुई।
* इस संधि में तय हुआ कि अंग्रेज रघुनाथराव को पेशवा बनाने के लिए 2500 सैनिकों की सहायता देंगे।
* मराठे, बंगाल, कर्नाटक पर आक्रमण करना बन्द कर देंगे।
* यदि रघुनाथराव ने पूना दरबार से कोई संधि की तो उसमें अंग्रेजों को सम्मिलित किया जायेगा।

11-03-2019 13:41

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82 ई०)

* 18 May 1775 ई० में 'आरस के मैदान' में अंग्रेजों और मराठों के मध्य अनिर्णायक युद्ध हुआ। जिसमें मराठों की हार हुई।

[i] पुरन्दर की संधि (1776 ई०): अंग्रेज सरकार और पूना दरबार के प्रतिनिधि नाना फडनवीस के मध्य 1 Mar 1776 ई० को 'पुरन्दर की संधि' हुई।

[ii] वड़गाँव की संधि (1779 ई०): पुणे दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि हुई।

⊙ वारेन हेस्टिंग्स ने इस संधि को मानने से इनकार कर दिया।

[iii] सालबाई की संधि (1782 ई०):- महादजी सिंधिया की मध्यस्थता से पूना दरबार एवं अंग्रेजों के बीच यह संधि 17 May 1782 ई० में हुई।

⊙ इस संधि के द्वारा आंग्ल-मराठा युद्ध रुका।

⊙ इस संधि से अंग्रेजो ने रघुनाथ राव का साथ छोड़कर माधव नारायण राव को पेशवा माना।

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-05 ई०)

Farha

* यह युद्ध दो मुख्य केन्द्रों में शुरु हुआ।

[i] दक्कन: वेलेजली के अधीन अंग्रेजी सेना एवं सिंधिया व भोसले की संयुक्त सेना के बीच यह युद्ध हुआ जिसमे वेलेजली विजयी हुआ।

[ii] जनरल लेक के अधीन अंग्रेजी सेना एवं सिंधिया के बीच उत्तर भारत में यह युद्ध हुआ जिसमें अंग्रेजी सेना विजयी हुई।

⊙ देव गाँव की संधि (1803 ई०): यह संधि 17 Dec 1803 ई० को रघुजी भोंसले एवं अंग्रेजों के बीच हुई।

⊙ सुर्जी अर्जन गाँव की संधि (1803 ई०): सिंधिया एवं अंग्रेजों के मध्य 30 Dec 1803 ई० को यह संधि हुई।

11-03-2019 13:42

तृतीय आंग्ल - मराठा युद्ध (1817 - 1818 ई०)

* यह युद्ध पेशवा एवं अंग्रेजों के मध्य हुआ, जिसमें अंग्रेजों की जीत हुई।
* 13 June 1817 ई० में पेशवा एवं अंग्रेजो के मध्य 'पूना की संधि' हुई। संधि के तहत पेशवा को मराठा संघ की अध्यक्षता त्यागनी पड़ी।
* 5 Nov 1817 ई० में दौलत राव सिंधिया एवं अंग्रेजों के मध्य 'ग्वालियर की संधि' हुई।
* 27 May 1816 ई० में नागपुर के भोंसले एवं अंग्रेजों के मध्य 'सहायक संधि' हुई।
* 6 Jan 1818 ई० में होल्कर एवं अंग्रेजों के मध्य 'मन्दसौर की संधि' हुई।
* अंग्रेजों एवं पेशवा के मध्य और दो बार संघर्ष हुआ। जिसमें - कोरेगाँव 1 Jan 1818 ई; जिसमें पेशवा की हार हुई।
* दूसरा संघर्ष अष्टी में Feb 1818 ई० में हुआ इसमें भी पेशवा की हार हुई।
* 3 June 1818 ई० में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने आत्मसमर्पण जान - मेल्कम के सामने कर दिया।
* मराठा साम्राज्य का अंतिम छत्रपति शाहजी अप्पा साहेब था।

मराठों के पतन के कारण

Farhan

◉ एकता का अभाव, आर्थिक नीति का अभाव, मराठो की कूटनीतिक असफलता, सैनिक अकुशलता, जाति प्रथा, जागिरदारी व्यवस्था :

महत्वपूर्ण तथ्य

* शिवजी को 'पहाड़ी चूहा' की संज्ञा औरंगजेब ने दी।
* शिवाजी ने मुगलों को सलेर के युद्ध में हराया था।
* बीजापुर के सुल्तान ने अफजलखाँ सेना नायक को शिवजी को दबाने के लिए भेजा था।

11-03-2019 13:42

* अष्टप्रधान, शिवाजी की मंत्रिपरिषद थी।
* मुगलों की कैद से भागने के पूर्व शिवाजी आगरा में कैद थे।
* औरंगजेब की मृत्यु के समय मराठा नेतृत्व ताराबाई के हाथों में था।
* 'पुरन्दर की संधि' के समय वहाँ पर विदेशी यात्री 'मनूची' उपस्थित था।
* मराठा शासकों में 'शिवाजी' को गौ ब्राह्मण प्रतिपालक की संज्ञा दी गई।
* शिवाजी द्वारा जमीन मापन हेतु 'कुल्ही' (जरीब) यंत्र का प्रयोग किया गया था।
* मराठों को सर्वप्रथम उमरा वर्ग में शामिल करने वाला मुगल शासक जहाँगीर था।
* मराठों की पर्वतीय सैनिक टुकड़ी को 'मवाली' कहा जाता था।
* शिवाजी के अंगरक्षकों को मवाली सैनिक कहते थे।
* औरंगजेब ने ताराबाई को 'ईमानदार' की उपाधि दी थी। farha
* बालाजी बाजीराव की प्रशस्ति में यह कहा गया है कि, "मराठा घोड़ों ने कन्याकुमारी से लेकर हिमालय के झरनों तक अपनी प्यास बुझाई।"
* पानीपथ के तृतीय युद्ध में इब्राहिम गार्दी सेनानी मराठा की ओर से था।
* नाना साहब के नाम से बालाजी बाजीराव पेशवा को जाना जाता था।
* अंग्रेजों द्वारा पेशवा प्रथा बाजीराव द्वितीय पेशवा के काल में समाप्त की गई थी।
* काशीपण्डित इतिहासकार ने पानीपथ की तीसरी लड़ाई को स्वयं देखा था।
* 'मोड़ी लिपि' का प्रयोग मराठों के अभिलेखों में किया गया है।
* 'पतदाम' नामक कर (Tax) विधवा पुनर्विवाह पर लिया जाता था।
* अव्वल, साधारण और निम्न शब्द 'भूमि के लिए' प्रयुक्त होते थे।
* टण्डल तथा सरटण्डल अधिकारी नौसेना विभाग से सम्बन्धित थे।
* वित्तीय संकट के समय वसूल किया जाने वाला कर 'कुर्जापट्टी' या 'तस्ती पट्टी' था।
* मराठा सरदारों को दिया जाने वाला 'चौथ' आय का 66% भाग 'मोकास' कहलाता था।

farha

11-03-2019 13:42